DR. PRITI RANJAN

B.A part- III

Paper- V

Topic- Akbar ki Religious Policy.

(1556 - 1605 ई०)

Q अकबर की धार्मिक नीति का मूल्यांकन कीजिए ?

मुगल सल्तनत का सर्वश्रेष्ठ बादशाह अकबर ने अनेक वजहों से प्रेरित होकर धर्म के क्षेत्र में उदारता की नीति को प्रोत्साहन दिया था। वह एक राष्ट्रीय राज्य की स्थापना करना चाहता था जिसके लिए धार्मिक मतभेद को दूर करना अति आवश्यक था। राजनीतिक उद्देश्य के साथ-साथ अकबर सत्य की भी पहचानता था, अतः उसने सभी धर्मों के मूल सिद्धांतों को समझने का प्रयास किया। अकबर के पिता एक सुन्नी थे और माता शिया। अकबर की धार्मिक नीति को प्रभावित करने में उसके शिक्षक अब्दुल लतीफ का काफी योगदान था। अब्दुल लतीफ सूफीमत में विश्वास रखता था। अतः अकबर पर आरम्भ से ही इस्लाम धर्म की विभिन्न विचारधाराओं का प्रभाव पड़ा। आगे चलकर अकबर का सम्पर्क हिन्दू धर्म के साथ भी हुआ तब उसने राजपूत राजघरानों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये। उसने जजिया जैसे कर को समाप्त कर दिया। और साथ ही सती प्रथा को समाप्त करने का प्रयास किया। उसने अनेक हिन्दू धर्म में फैली कुरीतियों को समाप्त कर दिया। उसकी यह हिन्दू नीति धार्मिक स्वतंत्रता पर आधारित थी साथ ही उसका सम्पर्क आगे चलकर ईसाइयों और पारसियों के साथ भी हुआ जो उनके द्वारा मुगल दरबार में निमंत्रित किए गए। इन विभिन्न विचारधाराओं ने अकबर को सभी धर्मों के प्रति सद्भाव और सहिष्णुता की नीति अपनाने को प्रेरित किया।

अकबर एक ऐसे धर्म की स्थापना करना चाहता था जिसमें सभी धर्मों का सार निहित हो और जिसमें समन्वय तथा सौहार्द की भावना हो, अकबर के इसी प्रयास का उपज था दीन-ए-इलाही।

धार्मिक नीति

अकबर के पूर्व सल्तनत कालीन शासकों द्वारा उदार धार्मिक प्रवृत्ति का प्रदर्शन नहीं हुआ था, लेकिन अकबर ने उदार धार्मिक नीति का आरम्भ अपने शासनकाल में किया। ~~सबसे~~ पहले अकबर व्यक्तिगत रूप से उदार प्रवृत्ति का व्यक्ति था, इसलिए धार्मिक क्षेत्र में वह किसी विशेष मत का समर्थन न कर सत्य का प्रत्यासी किया। अकबर की इस उदार धार्मिक नीति के

कार्यान्वयन के लिए अनुकूल वातावरण भी प्राप्त हुआ। 15 वी शताब्दी के एवं 16 वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भारत में भक्ति आंदोलन के संतो और सूफी संतो ने धार्मिक कट्टरता की भावना को कम करने और हिन्दुओं एवं मुसलमानों के बीच आलगाव में कमी लाने में सराहनीय योगदान दिया था। अतः धार्मिक उदारता की यह नीति जन-साधारण के बीच मान्यता प्राप्त कर सकी और अकबर को इस दिशा में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से सफलता प्राप्त हो सकी। अकबर की धार्मिक नीति का विकास क्रमिक रूप से हुआ। उनसे करों को समाप्त किया और साथ ही धार्मिक आडम्बरो को भी खत्म करने का प्रयास किया।

अकबर अनेक धार्मिक परिवर्तन भी किये ये परिवर्तन मिश्रित रूप से अबुल फजल उसके भाई फैजी और उन दोनों के पिता शेख मुबारक के प्रभावों का परिणाम थे। अबुल फजल ने अकबर के सामने यह विचार रखा कि सम्राट को ईश्वर के गुणों का प्रतिबिम्ब होना चाहिए। जिस प्रकार ईश्वर किसी में भेद नहीं करता और सभी को एक समान समझता है, ठीक इसी प्रकार सम्राट भी सभी को एक समान समझे और सहिष्णु नीति को अपनाये। यह नीति सुलहे कुल की नीति के नाम से विख्यात है। इसका उद्देश्य सब धर्म को एक समान समझना था। अबुल फजल के अनुसार इस नीति का अनुसरण करने वाला ही सच्चा न्यायप्रिय शासक है और अपनी प्रजा का सच्चा नेता और अथवा इमाम-ए-आदिल है।

इन विचारों ने अकबर को विभिन्न धर्मों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने की प्रेरणा दी और 1575 में प्रार्थना भवन का निर्माण कराया। जिसमें आचार्यों का वाद-विवाद होता था, लेकिन अकबर इससे खुश नहीं था क्योंकि इसमें एक-दूसरे के धर्म पर विचार करने के बजाय इसकी आलोचना होती थी। बाद में अकबर ने इसे समाप्त कर दिया। फिर से व्यक्तिगत रूप से विभिन्न धर्मो के आचार्यो के साथ विचार-विमर्श जारी रखा।

इस धार्मिक वाद-विवाद के कार्यक्रम के आधार पर उसने घोषणा पत्र महजर (1579) को जारी किया। जिसके आधार पर अब अकबर धार्मिक प्रश्नो पर भी अपना विचार व्यक्त कर सकता है। इस पर विभिन्न इतिहासकारो ने अपनी-

धर्म परिवर्तन

प्रार्थना

महजर नामा

अपनी राय व्यक्त कि है। स्मिथ के अनुसार, पोप के असीम अधिकारों की तरह इस महजर को Infallibility Decree का नाम दिया है और उसे अकबर की असीम निरंकुशता का प्रमाण माना है तो कुछ इतिहासकारों के अनुसार यह घोषणा पर अकबर को हिन्दु, जैन, बौद्ध, पारसी एवं अन्य प्रजा के साथ मुसलमानों के समान स्तर पर व्यवहार का अधिकार प्राप्त नहीं किया। बल्कि उसने केवल उलेमा वर्ग के राजनीतिक मे हस्तक्षेप की सम्भावना को समाप्त किया, क्योंकि वह जानता था कि उदार धार्मिक नीति का सबसे प्रबल विरोध उलेमा वर्ग द्वारा ही हो सकता है।

अकबर के इस निर्णय का विरोध उलेमा वर्ग द्वारा की गया जिससे गंभीर स्थिती बन गई लेकिन अकबर ने बड़े धैर्य का परिचय दिया और उसने उलेमा वर्ग की शक्ति पर नियंत्रण कर लिया और अकबर के लिए धार्मिक नीति के क्षेत्र में एक अंतिम प्रयोग का मार्ग प्रशस्त किया। जो दीन-इलाही के नाम से विख्यात है:-

सभी धर्मो के सार संग्रह के रूप में अकबर ने 1582 ई० में दीन-ए-इलाही आरम्भ किया। सर्वधर्म समन्वय के सिद्धांत पर आधारित दीन-ए-इलाही की स्थापना अकबर ने राजनीतिक सुरक्षा के लिए की थी। मौलिक रूप से अकबर ने इसे धर्म के रूप में कभी नहीं देखा। यह ऐसी आचार संहिता थी, जिसमें विभिन्न धर्मों के आदेशों एवं उपदेशों का संकलन था अकबर द्वारा इसे प्रचारित करने का उद्देश्य केवल इतना था कि विभिन्न धर्मों के अनुयायियों में एकता और सामंजस्य की स्थापना की जा सके क्योंकि राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में प्रगति तभी हो सकती है। अर्थात दीन-ए-इलाही हिन्दु और मुसलमानों दोनों को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए एक अच्छा रामबाण था पर कामयाबी कम हासिल हुई।

इसके निम्नलिखित सिद्धान्त है:-

1) सम्राट को अपना आध्यात्मिक गुरु मानना
2) उसके आदेशानुसार आचरण करना।
3) अपने वर्षगाँठ के दिन दावत एवं दान का आयोजन करना एवं मरणोपरांत जीवन में कल्याण के लिए दान, आदि करना।

4) शाकाहारी भोजन लेना।
5) सांसारिक सुखों एवं कामनाओं का परित्याग।
6) विशुद्ध नैतिक जीवन व्यतीत करना।
7) इस धर्म के अनुयायी चार वर्गों में बँटे थे - (i) जो अपनी संपत्ति सम्राट पर न्योछावर करने को प्रस्तुत करते थे।
(ii) जो लोग अपनी संपत्ति तथा जीवन सम्राट पर समर्पित करने को तैयार थे।
(iii) जो सम्राट के लिए अपनी संपत्ति, जीवन तथा सम्मान बलिदान करने को उद्यत थे।
(iv) जो संपत्ति, जीवन, सम्मान तथा धर्म - समर्पित करने को उत्सुक तथा तैयार थे।

इस धर्म में त्याग, सहिष्णुता और उदारता की प्रधानता थी, इसके सिद्धांत अत्यंत सरल थे कोई भी इसका सदस्य हो सकता था तथा किसी को भी अकबर ने इसके सदस्य के लिए बाध्य नहीं किया। यही वजह था कि अकबर के मृत्यु के पश्चात् ही यह धर्म भी स्वतः समाप्त हो गया। हालांकि शाहजहाँ का पुत्र दारा इसके सदस्य थे लेकिन दारा की मृत्यु के साथ ही यह धर्म बिल्कुल समाप्त हो गया। स्मिथ ने इसे "अकबर की मूर्खता का स्मृति चिह्न कहा है।"

निष्कर्ष

उपरोक्त तमाम जज्बातों से साफ जाहिर होता है कि अकबर धार्मिक नीति के कारण सहिष्णुता की नीति अपनाई और साथ ही उसने हिन्दुओं के साथ भी अच्छा व्यवहार किया और हिन्दू धर्म को आदर की दृष्टि से देखा, हिन्दुओं - मुसलमानों के बीच एकता का सेतु स्थापित करना इसका उद्देश्य था जो तत्कालीन भारत के लिए अतिआवश्यक था। लेकिन इसकी यह नीति सफल ना हो सकी, क्योंकि इस पर सामान्य जनता का विश्वास नहीं था। लेकिन यह नीति अकबर की महानता का परिचय देता है जिसने विभिन्न धर्मों के बीच सौहार्दता लाने का एक अत्यंत सराहनीय प्रयास किया और उसकी धार्मिक नीति के रचनात्मक परिणाम निकले। इससे अकबर को साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित करने में सफलता मिली और साथ ही राजनीतिक लाभ भी प्राप्त हुआ।